

## योगभट्टी

योग भट्टी का अर्थ क्या है? एवं भट्टी में हमें बैठने की जरूरत क्यों है?

जब किसी चीज का आमूल-चूल परिवर्तन करना हो या मूल्य बढ़ाना हो तो original स्वरूप लगाना हो तो उसे भट्टी में डाला जाता है, और कोई भी प्रक्रिया जब अग्नि रूप ले किसी भी चीज को परिवर्तन कर दे अर्थात् खाक कर दे तो उस प्रक्रिया को भट्टी कहते हैं। 2500 वर्ष से आत्मा के ऊपर अनवरत रूप से पतंजर पतंज विकारों की मेल चढ़ती चली गयी, जिसको सहज छोड़ना नामुमकिन जैसा हो गया एवं बार-बार की हीन भावना आ गई और उसके original गुण धूमिल पड़ते गये, विकारों की इतनी खाद पड़ी कि आत्मा की value कौड़ी तुल्य हो गयी, पुनः उसे original स्वरूप में व मूल्य बढ़ाने के लिए भट्टी में डालना ही पड़ेगा। अन्य कोई भी प्रक्रिया प्रभावी नहीं होती है तब भट्टी का प्रयोग किया जाता है, अब भट्टियाँ भी कई प्रकार की होती हैं.....।

1- धोबी की भट्टी - धोबी की भट्टी में गंदे से गंदे कपड़ों को पक्के से पक्के दागों को छुड़ा कर कपड़ों को साफ किया जाता है। इसमें कपड़े नये नहीं होते सिर्फ साफ होते हैं। इसी प्रकार अगर हम अपने रोज की भट्टी में डालें तो उस पर लगे पक्के से पक्के दाग अथवा मोटे मोटे संस्कार छूट जाती है। जैसे भोजन की टी0 वी0, फैशन, अपशब्द इन सबसे जो आत्मा पर मैलापन चढ़ा था या चढ़ता है वह छूट जाता है।

2- दूसरे प्रकार की भट्टी- कुम्हार की भट्टी।- कुम्हार की भट्टी में कच्चे मिट्टी के बर्तनों को पकाने के लिए डाला जाता है। जहां पर उन्हें धक्कती हुई आग में करीने से सेंट किया जाता है। जहां पर वह अग्नि को कुछ इस तरह समझता है कि खुद को तो मजबूत बनाता ही है और उस अग्नि को इस तरह परिवर्तन करता है कि दूसरों की भी तपत बुझाता है गर्म पानी को भी ठंडा कर देता है। जो शरीर के लिए बहुत ही लाभदायक होता है इसी प्रकार अगर हम स्वयं को ज्ञान योग के साथ संगठन की भट्टी में डालते हैं। तो हमारे वाह्य कर्म लोगों को सुख देने लगते हैं। जैसे हमारे बोल ज्ञान मुक्त होने लगते हैं। तो हमारे सम्पर्क में जो भी आता है तो हम इतना अच्छा Motivate कर पाते हैं जिससे ज्ञान बल एवं Adjusting Power से अनुभव का बल भी होता है। जिससे जब किसी को निदान मिलता है तो उसे खुशी मिल जाती है। और योग की अग्नि को भी हम कुछ इस तरह अपने अन्दर समावेश करते हैं कि हमारे विचारों में स्थिरता एवं समर्थी आती है जिससे हर परिस्थिति को झेलने में सहाय हो जाते हैं। जिससे अन्य को भी अपने मधुरता रूपी गुण से उसके क्रोधाग्नि को भी ठंडा करने में सफल होते हैं।

3- तीसरे प्रकार की भट्टी- लोहार की भट्टी। पुराने लोहे की जंक उतारने के लिए एवं नये यन्त्र बनाने या पुराने यन्त्रों की धार तेज करने के लिए लोहे को एकदम प्रज्वलित अग्नि में डाला जाता है। पर यह भट्टी लोहे को बाहर से साफ करता है। उसे अन्दर से साफ नहीं करता। जब लोहे को अग्नि में डाला जाता है तब वह बेहद मुलायम हो जाता है जिसके कारण उसे विभिन्न आकार में ढाला जा सकता है पर इसके लिए उस पर काफी गहरी चोट देनी पड़ती है। फिर उनसे अनेक उपकरण तैयार हो जाते हैं जिन उपकरणों पर ही मनुष्य का लगभग सारा ही जीवन निर्भर होता है इसी प्रकार आत्मा को हम जब लगन में मगन वाली भट्टी में स्वयं को डालते हैं तब उस पर अनेक अमान्य आवरणों का जंक तो छूटता ही साथ-2 वह बेहद Molding Nature की हो जाती है और उस पर द्रवता की निहाई Cheaking के हथौड़े से

Attention का War होता रहे तो आत्मा को अनेक दैवी गुणों से उसे दिव्यता, नैतिकता, इंसानियत, मानवता आदि के आकारों में बला जा सकता है जिससे उसके साथ-2 समाज को भी सम्पूर्ण सुख दिया जा सकता है।

**4- चौथे प्रकार की भटठी है-** सुन्दर की भटठी। जिस भटठी में सोने की अन्दर बाहर सभी खाद निकलती है वह काफी मुलायम भी हो जाता है जिसे भी विभिन्न आकारों में डिजाइन में बला जा सकता है जिन आभूषणों से व्यक्ति की सुन्दरता में निखार आता है पर वह अन्दर से इतना Pure हो कर इतना चमकदार हो जाता है कि बनाने की शकल दिखाई देने लगती है इसी प्रकार आत्मा को हम ज्वाला स्वरूप एकाग्रता की तपस्या भटठी में डालते हैं तो उसमें आत्मा इतनी तप जाती है कि हमारी जन्म-जमान्तर की खाद तो निकलती ही है साथ-2, 2500 वर्षों के अति जटिल संस्कारों को भी Mold किया जा सकता है जिसके बाद उसमें अनेक गुणों का डिजाइन बनाकर मानव मन की सुन्दरता काफी बढ़ जाती है और इस भटठी में आन्तरिक विचारों को वृत्तियों को, Feelings को Emotions को भी Change किया जा सकता है, सम्पूर्ण Pure दिव्यता का रूप सामने आ जाने पर वह इतना Pure हो जाता है कि उसमें अनादि आदि सभी गुण बिना कोई खास पुरुषार्थ के ही Emerde हो जाते हैं। इस Parity के कारण ही मिारी सीरत में परमात्मा पिता की सीरत दिखाई देने लगेगी। भट्टियों में बैठने से निम्नलिखित आत्मिक स्थिति हमारे अनुभव में आती हैं-

**1- आत्मिक स्थिति-** यह हमारी पहली और आखिरी स्थिति है अर्थात् हमारा Base है और हमारे लिए अति आवश्यक है। आत्मिक स्थिति अर्थात् स्वयं को ज्योतिस्वरूप आत्मा समझना व अन्य को भी आत्मा समझना। इस स्थिति के बिना हमारा ईश्वरीय जीवन ही नहीं चल सकता बाबा की याद भी नहीं आ सकती। जैसे हम कमरे में बैठे हैं पर अपने को कमरे से अलग महसूस कर रहे हैं, ऐसे ही हम अपने को शरीर रूपी कमरे में मस्तक के बीच अपने को स्थित हुआ देखते हैं जैसे हम यहां बैठे हैं। इस अभ्यास से दैहिक समस्यायें अर्थात् देहभान से संबंधित सभी बातें सुलझाना सरल हो जायेगा। बाबा की याद भी स्वतः एवं सहज आयेगी। जैसे वन्दा वैरागी।

**2- देही अभिमान्नी स्थिति -** यह स्थिति आत्मा की मालिकपन की Feeling की स्थिति है अर्थात् नशे वाली स्थिति है, कि मैं आत्मा राजा हूँ, सर्व शक्तिवान का बच्चा हूँ, स्वमान जाग्रत होता है, और हीन भावना व दिलशिकस्ती व संशयात्मक वृत्ति खत्म होती है, देही अभिमान्नी स्थिति का अभ्यास करने से।

**3- अशरीरी स्थिति-** अशरीरी स्थिति अर्थात् अपने शरीर से अलग होकर फिर शरीर को देखना। अपने को बिल्कुल अलग करके न्यारा हो जैसे दूसरे के शरीर को देखना। शरीर के ळान से बिल्कुल परे। इस अभ्यास से मृत्यु का भय निकल जायेगा। कुछ भी किसी का अन्त में होगा आपमें सब देखने की चूमत आ जायेगी। साक्षी पन न्यारा व अनाशक्त वृत्ति आ जायेगी।

**4- विदेही अवस्था-** देह से बिल्कुल अलग होकर कर्मेन्द्रियों से करावन्हार की स्मृति। सब कुछ करते सबके साथ रहते, सब कुछ Use करते फिर भी साक्षी व करावन्हार की स्मृति। देह से भी अनाशक्त। इस अभ्यास से शरीर की आसक्ति खत्म होगी। लगाव-झुकाव प्रभाव व दबाव से मुक्त रखे Trastee पन आयेगा। कर्म करते भी Double light रहेंगे। सुख- दुख निंदा स्तुति हार-जीत में समान रह पायेंगे।

5- बीज रूप स्थिति- एक पीपल एवं बरगद के अति सूक्ष्म बीज में जिस प्रकार विशाल पेड़ सारी शक्ति सम्मोहित रहती है पर वह दिखाई नहीं पड़ती गुप्त रहती है, इसी प्रकार बीज रूप स्थिति अर्थात् सम्पूर्ण Dharma की Knowledge सम्मोहित पर निरंकारिता की पराकाष्ठा से परिपूर्ण। सम्पूर्ण Part की Power होने के बावजूद भी गुप्त रहता है। इस अभ्यास से सदा तृप्त आत्मा रहेंगे।

6- निराकारी एवं बिन्दू स्वरूप की स्थिति- बिन्दू रूप अर्थात् मैं आत्मा ज्योति बिन्दू स्वरूप परमधाम में बाबा के सामने, जैसे बाबा वैसा ही मैं कोई भेद नहीं, कोई चाहना नहीं कामना नहीं, अवरोध नहीं। आत्मा की सम्पूर्ण Stage सम्पूर्ण शक्ति। इस अभ्यास से आत्मा में सर्व गुण आते जायेंगे। Original स्वरूप प्राप्त करने की खुशी। उपराम होते जायेंगे। सम्पूर्ण शान्ति की अनुभूति। सम्पूर्ण विकार जीवन सम्पूर्ण विकर्माजित बन सकते हैं।

ओम् शान्ति